6

नयी कविता
(अज्ञेय और भवानीप्रसाद मिश्र)

हिंदी कविता के इतिहास में 'नयी कविता' का आरंभ सन् 1950 के बाद हुआ। यह कविता प्रगतिवाद और प्रयोगवाद की विशेषताओं को साथ लेकर चली। लेकिन आगे चलकर इसने अपनी अलग पहचान बनाई। यह पहचान 'नयी कविता' पत्रिका के प्रकाशन काल (1954 ई.) से और स्पष्ट हुई। इसने नए भावबोध की अभिव्यक्ति के साथ नए मूल्यों और नए शिल्प-विधान का अन्वेषण किया। इस कविता ने कविता के परंपरागत संकीर्णताओं से अपने को मुक्त रखने की बात की। वस्तुत: कथ्य की व्यापकता और दृष्टि की उन्मुक्तता नयी कविता की सबसे बड़ी विशेषता है। इस कविता में दो तत्त्व प्रमुख हैं, एक-अनुभूति की सच्चाई और दूसरा-बौद्धिक यथार्थवादी दृष्टि। नयी कविता के कवि जीवन के प्रत्येक क्षण को जीने की लालसा रखते हैं। उनके लिए जीवन का हर क्षण सत्य है। इसलिए यह कविता अनुभूति को मार्मिकता के साथ पकड़ लेना चाहती है। नयी कविता के अंतर्गत आनेवाली अनेक कविताएँ आकार में छोटी हैं और प्रभाव में अत्यंत तीव्र। उसकी एक विशेषता यह भी है कि इसकी यथार्थवादी दृष्टि जीवन का मूल्य, उसका सौंदर्य, जीवन में ही खोजती है। आगे चलकर नयी कविता दो धाराओं में बँट गई–एक जिसमें वैयक्तिकता प्रमुख थी और जिसके प्रतिनिधि अज्ञेय थे और दूसरी वह जिसमें सामाजिक प्रतिबद्धता की प्रमुखता थी और जिसके प्रतिनिधि मुक्तिबोध थे।

आइए, इस पाठ में हम इस धारा के दो प्रमुख कवियों सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' और भवानीप्रसाद मिश्र की कविताएँ पढ़ते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- 'नदी के द्वीप' कविता में अभिव्यक्त व्यक्ति की स्वतंत्रता और अस्मिता का विवेचन कर सकेंगे;

टिप्पणी

- व्यक्ति, संस्कृति और समाज के अंतर्संबंधों पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- मानव जीवन में प्रकृति की भूमिका का उल्लेख कर सकेंगे;
- पर्यावरण-संरक्षण में अपनी भूमिका को अभिव्यक्त कर सकेंगे;
- प्रकृति के सौंदर्य और आदिवासी जीवन और संस्कृति के स्वरूप पर उपभोक्तावाद के प्रभाव का विश्लेषण कर सकेंगे।
- पठित कविताओं की भाषा-शैली और शिल्प-सौंदर्य की सराहना कर सकेंगे।

6.1 मूल पाठ

(क) सचिदानन्द हीरानंद वात्स्यंन 'अज्ञेय'

नदी के द्वीप

आइए, अज्ञेय की कविता को एक बार लय के साथ पढ़ लें-

चित्र 6.1: अज्ञेय

हम नदी के द्वीप हैं।
हम नहीं कहते कि हमको छोड़ कर स्रोतस्विनी बह जाय।
वह हमें आकार देती है।
हमारे कोण, गलियाँ, अंतरीप, उभार, सैकत कूल,
सब गोलाइयाँ उसकी गढ़ी हैं।

माँ है वह है, इसी से हम बने हैं।

किन्तु हम हैं द्वीप।
हम धारा नहीं हैं।
स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के
किन्तु हम बहते नहीं हैं। क्यों कि बहना रेत होना है।
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।

पैर उखड़ेंगे। प्लावन होगा। ढहेंगे। सहेंगे। बह जायेंगे।
और फिर हम चूर्ण होकर भी कभी क्या धार बन सकते?
रेत बन कर हम सलिल को तनिक गँदला ही करेंगे।
अनुपयोगी ही बनायेंगे।

द्वीप हैं हम।
यह नहीं है शाप। यह अपनी नियति है।
हम नदी के पुत्र हैं। बैठे नदी के क्रोड़ में।
वह बृहद् भूखंड से हमको मिलाती है।
और वह भूखंड अपना पितर है।

नदी, तुम बहती चलो।
भूखंड से जो दाय हम को मिला है, मिलता रहा है,

शब्दार्थ

द्वीप	-	स्थल का वह भाग जिसके चारों तरफ पानी हो
स्रोतस्विनी	-	नदी
अंतरीप	-	भूमि का वह नुकीला भाग जो समुद्र में दूर तक चला जाता है
उभार	-	उठान
सैकत कूल	-	रेतीला किनारा
धारा	-	प्रवाह, पानी का बहना
प्लावन	-	बाढ़, पानी में डूब जाना
चूर्ण	-	महीन रेत
सलिल	-	पानी
गँदला	-	गंदा
नियति	-	प्रकृति का विधान जो स्थिर और निश्चित होता है, भाग्य
क्रोड़	-	गोद, बीच में
बृहद	-	विशाल
भूखंड	-	धरती का टुकड़ा
पितर	-	पिता
दाय	-	दान, प्राप्त किया हुआ
आह्लाद	-	आनंद
स्वैराचार	-	स्वेच्छाचार
अतिचार	-	अतिक्रमण, मर्यादा तोड़ना

माँजती, संस्कार देती चलो:
यदि ऐसा कभी हो
तुम्हारे आह्लाद से या दूसरों के किसी स्वैराचार से–अतिचार
से–

तुम बढ़ो, प्लावन तुम्हारा घरघराता उठे,
यह स्रोतस्विनी ही कर्मनाशा कीर्तिनाशा घोर
काल–प्रवाहिनी बन जाय
तो हमें स्वीकार है वह भी। उसी में रेत होकर
फिर छनेंगे हम। जमेंगे हम। कहीं फिर पैर टेकेंगे।
कहीं फिर भी खड़ा होगा नये व्यक्तित्व का आकार।
मात:, उसे फिर संस्कार तुम देना।

चित्र 6.2: नदी के द्वीप

शब्दार्थ

घरघराता – नदी के तेज प्रवाह से उत्पन्न भीषण ध्वनि
कर्मनाशा – नदी का नाम
कीर्तिनाशा – यश का नाश करने वाली
घोर – प्रचंड, भीषण
काल–प्रवाहिनी – भयंकर प्रवाह वाली

बोध प्रश्न 6.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कविता में किसके लिए 'माँ' शब्द का प्रयोग किया गया है ?

   (क) नदी (ख) धारा (ग) जल (घ) द्वीप

2. नदी के लिए किस अन्य शब्द का प्रयोग किया गया है ?

   (क) स्रोतस्विनी (ख) अंतरीप (ग) प्लावन (घ) संस्कार

3. 'पितर' किसे कहा गया है?

   (क) किनारे को (ख) भूखंड को (ग) समर्पण को (घ) श्राप को

6.2 आइए समझें

कविता पढ़कर आप जान चुके हैं कि इसमें प्रतीकों के माध्यम से एक विचार संप्रेषित किया गया है। कविता की आरंभिक पंक्तियों में नदी के मध्य बने द्वीप का बिंब है। इसमें नदी से द्वीप बनने की सहज प्रक्रिया का उल्लेख है। लेकिन आगे जब इन प्रतीकों का अर्थ खुलता है तो यह कविता बोध के स्तर पर एक अलग अर्थ संप्रेषित करती है। इस कविता में आए प्रतीकों के अर्थ को आरंभ में ही जान लेना आवश्यक है। इससे कविता को समझने में आसानी होगी। कविता में आए 'नदी', 'द्वीप' और 'भूखंड' शब्द का प्रयोग प्रतीक के अर्थ में हुआ है। 'नदी' का प्रयोग माँ और संस्कृति के अर्थ में, 'द्वीप' का शिशु और व्यक्तित्व के अर्थ में और 'भूखंड' का पिता और समाज के अर्थ में प्रयोग हुआ है। कविता में प्रतीकों का एक स्तर प्राकृतिक है (द्वीप, नदी, भूखंड) दूसरा स्तर मानवीय है (शिशु, माँ, पिता)। ये दोनों स्तर मिलकर प्रकृति और मनुष्य के संबंध को स्पष्ट करते हैं।

टिप्पणी

हम नदी के द्वीप हैं।
हम नहीं कहते कि हम को छोड़ कर स्रोतस्विनी बह जाय।
वह हमें आकार देती है।
हमारे कोण, गलियाँ, अंतरीप, उभार, सैकत कूल,
सब गोलाइयाँ उसकी गढ़ी है।
माँ है वह। है, इसी से हम बने हैं।

आइए, इस कविता को समझते हैं।

अंश–1

हम नदी के द्वीप .... हम बने हैं।

आइए, कविता के पहले अंश को पढ़ते हैं।

प्रसंग : इस अंश में द्वीप नदी को अपनी माँ के रूप में देखता है और अपने स्वरूप ग्रहण करने की प्रक्रिया का उल्लेख करता है।

व्याख्या : आप जानते हैं कि द्वीप उस स्थल को कहते हैं जो चारों तरफ से पानी से घिरा होता है। ऐसे द्वीप नदियों में भी बने होते हैं। इन्हें नदियाँ अपनी धारा के साथ लायी मिट्टी और रेत के कणों से धीरे-धीरे रूप और आकार देकर निर्मित करती हैं। अपना रूप और आकार ग्रहण कर लेने के बाद ये द्वीप नदी की धारा में रहते हुए भी उसकी धारा से स्वतंत्र अपनी अलग पहचान बना लेते हैं। वे यह नहीं चाहते कि नदी की धारा इन्हें छोड़कर बह जाए। इसलिए कि द्वीप जानते हैं कि नदी के बिना इनका कोई अस्तित्व नहीं है। द्वीप इस सत्य से इनकार नहीं कर सकते कि इनके रूप और आकार में कोण, गलियाँ, उभार, रेतीले किनारे और गोलाइयों का जो सौंदर्य है; वह सब प्रवाहमान नदी ने ही गढ़े हैं। नदी से अपना अस्तित्व प्राप्त करने वाले द्वीप, नदी को अपनी माँ के रूप में देखते हैं।

कविता की इन पंक्तियों में नदी माँ का प्रतीक है और द्वीप उसके शिशु का। जिस प्रकार माँ अपने गर्भ में शिशु को धारण करके उसे रूप-आकार देकर जन्म देती है उसी प्रकार नदी भी द्वीप को रूप और आकार देकर उसे गढ़ती है। जिस प्रकार धीरे-धीरे शिशु अपनी माँ से भिन्न अपनी एक अलग पहचान प्राप्त करता है, उसी प्रकार द्वीप भी नदी से भिन्न अपना स्वतंत्र अस्तित्व प्राप्त करता है।

कविता की इन आरंभिक पंक्तियों में कवि का उद्देश्य नदी और द्वीप के सामान्य प्राकृतिक अर्थ को अभिव्यक्त करना नहीं है। बल्कि यहाँ 'नदी' और 'द्वीप' का प्रयोग प्रतीकात्मक अर्थ में किया गया है। कवि बताना चाहता है कि जैसे नदी द्वीप के रूप, आकार और सौंदर्य को गढ़ती है और उसे एक 'स्वरूप' प्रदान करती है, एक पहचान देती है, उसी प्रकार माँ अपनी ममता, प्रेम और परिश्रम से अपने शिशु का पालन-पोषण कर उसके शरीर को पुष्ट आकार और चेतना को उत्तम संस्कार देकर उसे 'व्यक्तित्व' प्रदान करती है। जिससे वह समाज में अपनी स्वतंत्र पहचान प्राप्त करने में सक्षम होता है। कवि बल देते हुए कहता है कि नदी द्वीप को जन्म देने वाली उसकी माँ है।

पाठगत प्रश्न 6.1

उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. द्वीप नदी को माँ के रूप में देखते हैं, क्योंकि–

(क) द्वीप चारों तरफ से पानी से घिरा होता है

(ख) नदी से ही द्वीप निर्मित होते हैं

(ग) नदी माँ का प्रतीक है

(घ) द्वीप नदियों में बने होते हैं

2. संस्कृति का एक गुण है –

(क) उत्पन्न (ख) स्थिरता

(ग) स्वतंत्रता (घ) आकार देना

क्रियाकलाप 6.1

आप अपने बचपन को याद कीजिए। आपका पालन-पोषण और देखभाल आपकी माँ या परिवार में ही किसी ने या संरक्षक ने बहुत प्यार और दुलार से किया होगा। सबसे पहले उन्हीं से आपने बोलना, चलना, उठना-बैठना, खाना-पीना, कपड़े पहनना आदि सीखा होगा। लोगों से कैसा व्यवहार करना चाहिए और कैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए यह सब भी सीखा होगा। यह भी जाना होगा कि किन बातों को स्वीकार करना चाहिए और किन बातों को नहीं। अपने जीवन की इन अनुभवों को याद कीजिए और लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

अंश-2

आइए, कविता की अगला अंश पढ़कर देखें :

किन्तु हम ....अनुपयोगी ही बनायेंगे।

किन्तु हम हैं द्वीप।
हम धारा नहीं हैं।
स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा
से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के
किन्तु हम बहते नहीं हैं। क्योंकि
बहना रेत होना है।
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।
पैर उखड़ेंगे। प्लावन होगा। ढहेंगे।
सहेंगे। बह जायेंगे।
और फिर हम चूर्ण होकर भी कभी
क्या धार बन सकते ?
रेत बन कर हम सलिल को तनिक
गँदला ही करेंगे।
अनुपयोगी ही बनायेंगे।

प्रसंग : अपनी 'पहचान' अथवा 'अस्मिता' के प्रति सजगता मनुष्य की सामान्य प्रवृत्ति है। आधुनिक हिंदी कविता में यह प्रवृत्ति प्रयोगवाद के साथ विशेष रूप से प्रकट हुई। साहित्य में इस धारा के प्रवर्तक 'अज्ञेय' माने जाते हैं। अज्ञेय ने अपने साहित्य में 'व्यक्ति-स्वातंत्र्य' और उसकी 'अस्मिता' को एक मूल्य के रूप में स्वीकार करते हुए 'व्यक्तित्व' को विशेष महत्व दिया है। इस अंश में द्वीप 'व्यक्तित्व' का प्रतीक है। अज्ञेय ने कविता में इस 'व्यक्तित्व' के निर्मित होने, उसके रूप-आकार ग्रहण करने और उसके अक्षय बने रहने की प्रक्रिया को प्रतीकों और बिंबों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

व्याख्या : आपने देखा कि कविता के इस अंश की आरंभिक दो पंक्तियों में पूर्ण विराम के साथ दो वाक्य हैं। कवि ने अपनी बात पर बल देने के लिए ऐसा वाक्य लिखा है। यह बात दृढ़तापूर्वक कही गयी है कि 'किन्तु हम हैं द्वीप।' 'हम धारा नहीं हैं'। इस कथन के द्वारा कवि द्वीप के अस्तित्व, उसकी पहचान की प्रमाणिकता को स्पष्ट रूप से स्थापित करना चाहता है। कवि बताना चाहता है कि द्वीप प्रवाहमान नदी से ही बने हैं लेकिन वे स्थिर हैं,

इस स्थिर रूप में ही उनकी पहचान है। वे नदी के प्रति अपना समर्पण भी इस स्थिर रूप में ही करते हैं। लेकिन ये द्वीप नदी के साथ कभी बहते नहीं हैं, इसलिए कि नदी के साथ बहते ही इनका अपना कोई अस्तित्व, कोई पहचान नहीं रह जाएगा। नदी के साथ बहते ही ये रेत में बदल जाएँगे और अपनी पहचान खो देंगे।

आगे की पंक्तियों में अस्तित्व या पहचान के मिटने को बड़े यथार्थवादी और संवेदनशील ढंग से रेखांकित किया गया है। द्वीप का अस्तित्व तभी तक स्थिर है जब तक वह जमीन से जुड़ा है; अन्यथा द्वीप ढ़हने लगेंगे, जल में डूबने लगेंगे, नदी के प्रवाह के धक्के लगेंगे और इस तरह अपनी पहचान खोकर नदी में रेत बनकर बह जाएँगे। कवि इन पंक्तियों में द्वीप की अस्मिता अथवा उसकी पहचान को लेकर यहाँ एक मार्मिक प्रश्न करता है कि द्वीप अपनी पहचान को मिटाकर नदी के साथ रेत बनकर बहते हुए क्या कभी धारा की पहचान पा सकता है ? वस्तुतः द्वीप अपनी पहचान मिटाकर, रेत बनकर नदी की धारा के साथ बहते हुए 'धारा' होने की पहचान कभी नहीं पा सकता बल्कि इस तरह रेत बनकर बहते हुए, वह नदी के जल की स्वच्छता को थोड़ा गंदा और मटमैला ही करेगा और नदी का वह जल किसी काम का नहीं रह जाएगा।

कविता में नदी को माँ स्वीकार करते हुए भी द्वीप धारा नहीं बनना चाहते, बल्कि द्वीप के रूप में ही अपनी पहचान बनाए रखना चाहते हैं। इसलिए कि उनकी पहचान हमेशा से ही नदी की धारा नहीं, द्वीप के रूप में ही रही है। व्यक्तित्व को अर्जित किए बिना समर्पण संभव ही नहीं हो सकता। कवि की धारणा है कि व्यक्तिवहीन समर्पण का कोई मूल्य नहीं होता। नदी के साथ द्वीप अपना व्यक्तित्व कायम रखते हुए स्थिर समर्पण करना चाहते हैं, किन्तु नदी के साथ बहना नहीं चाहते। व्यक्तित्व की स्थिरता के बने रहने से ही समर्पण भी संभव है इसलिए कवि ने स्थिर समर्पण कहा है।

आप ध्यान से देखेंगे तो नदी में निरंतरता और परिवर्तन साथ-साथ दिखाई देते हैं, अर्थात नदी का जल लगातार बहते हुए बदलता रहता है लेकिन नदी की धारा कभी टूटती नहीं है, निरंतर बनी रहती है। इसी प्रकार संस्कृति में भी निरंतरता और परिवर्तनशीलता को एक साथ देखा जा सकता है।

टिप्पणीः कोई भी संस्कृति हमेशा एक जैसी नहीं रहती, उसमें समय के अनुकूल धीरे-धीरे बदलाव होते रहते हैं। ये बदलाव इतने सूक्ष्म और धीमी गति से होते हैं कि कई बार इन्हें स्पष्ट रूप से देखना संभव नहीं होता है। हर समाज के अपने कुछ विशिष्ट सांस्कृतिक मूल्य होते हैं। ये मूल्य ही व्यक्ति की पहचान निर्मित करके उसे एक व्यक्तित्व प्रदान करते हैं। इन्हीं से व्यक्ति अपनी पहचान और व्यक्तित्व को प्रमाणित करता है।

इस कविता के माध्यम से कवि यह भी बताना चाहता है कि संस्कृति व्यक्तित्व का निर्माण उसी प्रकार करती है जैसे नदी, द्वीप का निर्माण करती है। द्वीप हमेशा से नदी के मध्य में अपने अस्तित्व, अपनी पहचान के साथ स्थिर रहते हैं। आप नदी के किनारे गए होंगे। उसके बीच में द्वीप होते हैं वैसे ही व्यक्ति भी समाज और संस्कृति से अपना व्यक्तित्व निर्मित कर अपना स्वतंत्र अस्तित्व प्राप्त कर लेता है। वस्तुतः चाहकर भी कोई व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को किसी संस्कृति में विलीन करना नहीं चाहता।

कवि की धारणा है कि इस बहने के क्रम में सबसे पहले द्वीप के पैर उखड़ेंगे अर्थात उसके अस्तित्व का आधार नष्ट होगा। 'पैर उखड़ने' का अर्थ है यहाँ आधार न होना। इसके बाद प्लवन होगा अर्थात द्वीप जल की बाढ़ से पानी में डूब जाएगा। डूबने के क्रम में उसके कगार जल की धारा के प्रहार से टूट-टूट कर जल में गिरने लगेंगे और बहने लगेंगे। कवि प्रश्न शैली में संवाद करता है कि इस प्रकार रेत होकर बहते हुए क्या द्वीप धारा का रूप प्राप्त कर सकते हैं? आप बिलकुल ठीक समझ रहे हैं। द्वीप, धारा नहीं बन सकते हैं क्योंकि वे रेत हैं। इनका स्वभाव बहना नहीं, जमना है, स्थिर होना है। इसलिए बहने के क्रम में ये जल को थोड़ा मटमैला ही करेंगे। अपने अस्तित्व को नष्ट करने के बाद कवि उनकी कोई उपयोगिता नहीं देखता।

पाठगत प्रश्न 6.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'पैर उखड़ना' से तात्पर्य है-

   (क) नष्ट हो जाना (ख) डूब जाना

   (ग) टिक न पाना (घ) ऊपर उठना

2. रेत होने का आशय है-

   (क) नदी का बहना (ख) समर्पण करना

   (ग) पहचान मिटना (घ) मटमैला होना

अंश-3

आइए, कविता की अगली पंक्तियाँ पढ़ लें।

द्वीप हैं ... भूखंड अपना पितर है।

द्वीप हैं हम।
यह नहीं है शाप। यह अपनी नियति है।
हम नदी के पुत्र हैं। बैठे नदी के क्रोड़ में।
वह बृहद् भूखंड से हमको मिलाती है।
और वह भूखंड अपना पितर है।

प्रसंग : इस अंश में कवि ने भूखंड को पिता के रूप में देखने की बात कही है।

व्याख्या : कविता की इन पंक्तियों में कवि फिर से याद दिलाता है कि 'द्वीप हैं हम।' और इसके साथ ही यह घोषणा करता है कि द्वीप बनना अभिशाप या आकस्मिक घटना नहीं है, बल्कि यह उसकी नियति का परिणाम है। अर्थात द्वीप होना उसके भाग्य में पहले से ही निर्धारित है। कवि ने इन पंक्तियों में पुन: नदी को माँ और द्वीप को पुत्र के रूप में चित्रित किया है। यहाँ द्वीप को नदी के मध्य में ऐसे दिखाया गया है जैसे माँ अपने शिशु को गोद में लिए बैठी हो। कवि अपनी पहले कही बात को फिर से दुहराते हुए कहता है कि द्वीप नदी के पुत्र हैं। जिस प्रकार माँ अपने शिशु को गोद में समेटे भी रहती है, उसी प्रकार नदी के मध्य में द्वीप दिखाई देते हैं।

चित्र 6.3: वृक्ष और नदी

आपने देखा होगा कि नदी के बीच में रेत का थोड़ा उभरा हुआ हिस्सा, जो द्वीप के रूप में दिखाई देता है, वह नदी के दोनों किनारों पर दूर तक फैली हुई भूमि से भी जुड़ा होता है। कवि संकेत करता है कि नदी रूप-आकार देकर द्वीप को निर्मित ही नहीं करती है बल्कि उसे उस विस्तृत भू-खंड से भी मिलाने का भी काम करती है जिसका वह अटूट अंश है। इस कविता में जैसे नदी- माँ और संस्कृति तथा द्वीप- पुत्र और व्यक्तित्व के प्रतीक हैं, वैसे ही भूखंड-पिता और समाज के प्रतीक हैं। कविता में कवि ने माँ, पिता और पुत्र का एक पारिवारिक रूपक लिया है। जैसे माँ शिशु को जन्म देकर उसका पालन-पोषण करती है और उसका परिचय पिता से कराती है उसी प्रकार नदी भी द्वीप का निर्माण करती है और उसे विस्तृत भूखंड से मिलाती है। जैसे पुत्र से पिता का संबंध जैविक होता है उसे पालने का प्राथमिक दायित्व माँ का ही होता है। वैसे ही द्वीप भले ही विस्तृत भू-खंड का अंश होता है लेकिन उसे द्वीप के रूप में निर्मित करने का भार नदी ही उठाती है। भूखंड द्वीप का निर्माण नहीं कर सकते हैं। इस कविता में नदी, द्वीप और भू-खंड के प्रतीक का एक और स्तर है। इसे भी यहाँ समझ लेना आवश्यक है। जिस प्रकार नदी, द्वीप का निर्माण करती है और उसे विस्तृत भू-खंड से जोड़ती है, उसी प्रकार संस्कृति, व्यक्तित्व का निर्माण करती है और उसे समाज से जोड़ती है।

चित्र 6.4: माँ-बच्चे

पाठगत प्रश्न 6.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. नदी के क्रोड़ में बैठे होने की बात किसके लिए कही गयी है-

   (क) शिशु के　　　(ख) माँ के

   (ग) द्वीप के　　　(घ) पिता के

2. द्वीप को निर्मित करने का भार होता है–

(क) नदी पर (ख) भू-खंड पर

(ग) समाज पर (घ) संस्कृति पर

अंश- 4

आइए, कविता के इस अंश को एक बार पढ़ लें–

नदी तुम ... संस्कार तुम देना।

प्रसंग : इस अंश में कवि ने नदी का प्रतीकात्मक प्रयोग करते हुए उसकी निरंतरता की बात के साथ उसके भीषणतम रूप धारण करने पर भी नवीन सृजन और द्वीप के अस्तित्व के पुनः आकार लेने की बात कही है।

व्याख्या : आप जानते हैं कि इस कविता में प्रतीकों के कई स्तर हैं। आइए कविता के इस अंश को विभिन्न प्रतीकों के साथ जोड़ कर समझें। इन पंक्तियों में कवि नदी से निरंतर बहते रहने के लिए कह रहा है, क्योंकि नदी के प्रवाहमान होने से ही द्वीप का सृजन होता है। यह द्वीप नदी के तटों पर फैले विस्तृत भूखंड को पिता के रूप में स्वीकार करते हुए कहता है कि जिस प्रकार किसी पुत्र को विरासत में अपने पिता से बहुत सी वस्तुएँ स्वतः ही प्राप्त होती रही हैं, वैसे ही हमें भी विस्तृत भूखंड से वह सब कुछ प्राप्त होता रहा है। लेकिन हमें संस्कार देने और हमारे व्यक्तित्व को निखारने का काम तो माँ ही कर सकती है अर्थात् संस्कृति और परंपरा ही हमारा व्यक्तित्व निखारने का कार्य करते हैं। इसलिए तुम हमें निखारती और संस्कार देती चलो।

आप जानते हैं कि नदियों में पानी अधिक बढ़ जाने से या किन्हीं अवरोधों से नदियों में बाढ़ आ जाती है। कविता की इन पंक्तियों में कवि ने द्वीप के माध्यम से इन संभावनाओं की ओर संकेत करते हुए कहा है कि तुम्हारा भयंकर रूप भी हमें स्वीकार्य है। बाढ़ का भयंकर उफान आ जाए और तुम स्रोतस्विनी अर्थात निश्चित मार्ग से प्रवाहित होने वाली न रहो। कहने का आशय यह है कि प्रलय की स्थिति में हम अपनी पहचान को स्थिर नहीं रख सकते हैं। नदी के साथ प्रवाह में बह जाने से हम अपने को रोक नहीं सकते हैं। लेकिन द्वीप का विश्वास है कि नदी के प्रवाह में अपनी पहचान मिटाकर बहते हुए कभी न कभी उस जल प्रवाह से छनकर इकट्ठे होंगे और अपना रूप और आकार पाएँगे। फिर से अपनी पहचान बनाएँगे। नदी को 'माँ' कहकर संबोधित करते हुए कवि कहता है कि तुम उस रूप-आकार को, उस पहचान को फिर से संस्कार देना और उसे फिर से निखारना।

नदी, तुम बहती चलो।
भूखंड से जो दाय हम को मिला है,
मिलता रहा है,
माँजती, संस्कार देती चलोः
यदि ऐसा कभी हो
तुम्हारे आह्लाद से या दूसरों के किसी
स्वैराचार से–अतिचार
से–

तुम बढ़ो, प्लावन तुम्हारा घरघरा उठे,
यह स्रोतस्विनी ही कर्मनाशा कीर्तिनाशा
घोर
काल– प्रवाहिनी बन जाय
तो हमें स्वीकार है वह भी। उसी में
रेत हो कर
फिर छनेंगे हम। जमेंगे हम। कहीं
फिर पैर टेकेंगे।
कहीं फिर भी खड़ा होगा नये व्यक्तित्व
का आकार।
मातः, उसे फिर संस्कार तुम देना।

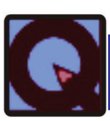

पाठगत प्रश्न 6.4

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. द्वीप को दाय मिलता है–

(क) आह्लाद से (ख) माँजने से

(ग) संस्कार से (घ) भूखंड से

2. कविता में प्रतीक के रूप में नहीं है–

(क) व्यक्ति (ख) भूखंड

(ग) नदी (घ) द्वीप

(ख) भवानीप्रसाद मिश्र

सतपुड़ा के घने जंगल

आपने दसवीं कक्षा में प्रकृति-सौंदर्य और प्रकृति के दोहन की समस्या आधारित कविताएँ पढ़ी है। इसी प्रकार अनेक कवियों ने प्रकृति के विभिन्न रूपों को कविता का विषय बनाया; जैसे- सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद आदि। भवानीप्रसाद मिश्र का नाम सुनते ही परंपरा में मिट्टी की सोंधी खुशबू और प्रकृति की हरियाली बरबस आँखों में बस जाती है। मिश्रजी की कविताओं को पढ़कर लगता है कि उनका जीवन प्रकृति के काफी करीब रहा है। आइए, पढ़ते हैं उनकी कविता 'सतपुड़ा के घने जंगल' जिसे पढ़कर मन में हरे-भरे जंगल की छवि आँखों के सामने जीवंत हो जाती है।

चित्र 6.5: भवानी प्रसाद मिश्र

क्रियाकलाप 6.2

वनों को बचाने के लिए किए जा रहे प्रयासों के विषय में आपने पढ़ा और सुना होगा। अपने आस-पास के पेड़ों को ध्यान से देखिए और अपने शब्दों में लिखिए कि ये आपके लिए क्यों उपयोगी हैं?

....

....

....

6.5 मूल पाठ

आइए 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता को एक बार ध्यान से पढ़ लेते हैं।

अंश-1

सतपुड़ा के घने जंगल।

नींद में डूबे हुए-से,
ऊँघते अनमने जंगल।

झाड़ ऊँचे और नीचे,
चुप खड़े हैं आँख मींचे;
घास चुप है, कास चुप है
मूक शाल, पलाश चुप है।
बन सके तो धँसो इनमें,
धँस न पाती हवा जिनमें
सतपुड़ा के घने जंगल
ऊँघते अनमने जंगल।

मकड़ियों के जाल मुँह पर,
और सर के बाल मुँह पर
मच्छरों के दंश वाले,
दाग काले-लाल मुँह पर,
वात-झन्झा वहन करते,
चलो इतना सहन करते,
कष्ट से ये सने जंगल,
नींद में डूबे हुए से
ऊँघते अनमने जंगल।

अंश-2

अजगरों से भरे जंगल।
अगम, गति से परे जंगल
सात-सात पहाड़ वाले,
बड़े छोटे झाड़ वाले,
शेर वाले बाघ वाले,
गरज और दहाड़ वाले,
कम्प से कनकने जंगल
नींद में डूबे हुए से
ऊँघते अनमने जंगल।

इन वनों के खूब भीतर,
चार मुर्गे, चार तीतर
पाल कर निश्चिन्त बैठे,
विजन वन के बीच बैठे,
झोंपड़ी पर फूस डाले
गोंड तगड़े और काले।

शब्दार्थ

अनमना = उदास
मूक = चुप
वात = हवा, वायु
झंझा = आँधी
अगम = न चलने वाला
निश्चिन्त = चिंता रहित, बेफिक्र
विजन = जनहीन, एकांत
निर्झर = झरना
पंछी = पक्षी, चिड़िया
दूर्वा = एक घास जो हरी और सफेद दोनों प्रकार की होती है।
किसलय = पौधों से निकलने वाले नए पत्ते, कोंपल

जबकि होली पास आती,
सरसराती घास गाती,
और महुए से लपकती
मत्त करती बास आती,
गूंज उठते ढोल इनके,
गीत इनके, बोल इनके

सतपुड़ा के घने जंगल
नींद में डूबे हुए से
ऊँघते अनमने जंगल।

अंश-3

धँसो इनमें डर नहीं है,
मौत का यह घर नहीं है,
उतर कर बहते अनेकों,
कल-कथा कहते अनेकों,
नदी, निर्झर और नाले,
इन वनों ने गोद पाले।
लाख पंछी सौ हिरन-दल,
चाँद के कितने किरन दल,
झूमते बन-फूल, फलियाँ,
खिल रहीं अज्ञात कलियाँ,
हरित दूर्वा, रक्त किसलय,
पूत, पावन, पूर्ण रसमय
सतपुड़ा के घने जंगल,
लताओं के बने जंगल।

6.6 आइए समझें

'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता पाठक को प्रकृति की ऐसी अकल्पनीय दुनिया में ले जाती है जो मनोरम सौंदर्य और आश्चर्य से भरी है। इस कविता में सतपुड़ा के जंगल का जीवंत वर्णन है। यह कविता अपने लयात्मक प्रवाह के लिए विशेष रूप से सराही जाती है।

भवानीप्रसाद मिश्र की 'सतपुड़ा के घने जंगल' एक मार्मिक कविता है। मध्य भारत का यह जंगल अपनी जैविक सम्पदा के लिए बहुत प्रसिद्ध है। कवि ने जीव-जगत के बीच मनुष्य की उपस्थिति को बहुत तटस्थता से उकेरा है। उन्होंने बहुत खामोशी से हमें यह समझाया है कि पृथ्वी सभी जीवों का आश्रय है। मनुष्य इन सभी जीवों में से एक प्राणी है। पूरी कविता की बनावट वाचिक शैली में है। अपनी ऊपरी बुनावट से यह कविता एक शिशु गीत का आनंद देती है। आइए, इस कविता के अर्थसंसार की एक बार सैर करते हैं।

अंश-1

सतपुड़ा के घने जंगल ..... ऊँघते अनमने जंगल।

व्याख्या

आइए, कविता के इस अंश को एक बार फिर से पढ़ लें।

प्रसंग : कवि ने इस अंश में जंगल की विविधता और जंगल के यथार्थ का चित्रण किया है।

व्याख्या : कवि बिना किसी भूमिका के हमें घने जंगल में प्रवेश कराते हैं। सतपुड़ा एक संज्ञा के रूप में प्रकट होता है। लेकिन ज्यों-ज्यों हम कविता में उतरते हैं, उसकी नवीन विशेषताएँ हमें मुग्ध करती चलती हैं। वन की सघन हरियाली नींद में ऊँघती हुई लग रही है। यह जंगल अपनी निश्चिन्तता में डूबा हुआ है। यानी जंगल का नीरव वातावरण नींद में तल्लीन है। कवि ने इन पंक्तियों में हमें यह भी संदेश दिया है कि आप इस अरण्य में बगैर किसी बाधा के प्रवेश करें। हस्तक्षेप से जंगल की नींद खुल जाएगी।

आगे कवि सतपुड़ा के जंगल का आँखों देखा हाल बयान करते हैं। जंगली झाड़ियाँ कुछ छोटी हैं और कुछ ऊँची। जंगल और झाड़ एक ही अरण्य के दो अनिवार्य हिस्से हैं। वहाँ घास और कास भी बहुतायत में हैं। इसी के बीच शाल और पलाश के पेड़ों का अन्तहीन सिलसिला है। लेकिन शाल के पेड़ भी इस सतपुड़ा के जंगल में चुपचाप बिना किसी कोलाहल के खड़े हैं। उसके संग-पड़ोस में पलाश का जो पेड़ है, वह भी मौन धारण किए हुए है। वृक्ष परंपरा में पलाश एक पवित्र वैदिक पेड़ है। विविध संस्कारों में पलाश के पत्ते और उसकी टहनियाँ काम में आते हैं। इसीलिए कवि की यह अभिलाषा है कि तनिक ठहर कर इसमें 'धँसो'। इसकी मनोरमता को आँखों में भर लो। जंगल की हवा भी इसमें सहसा नहीं प्रवेश कर पाती है।

सतपुड़ा के घने जंगल।
नींद में डूबे हुए से,
ऊँघते अनमने जंगल।

झाड़ ऊँचे और नीचे,
चुप खड़े हैं आँख मींचे;
घास चुप है, कास चुप है
मूक शाल, पलाश चुप है।
बन सके तो धँसो इनमें,
धँस न पाती हवा जिनमें
सतपुड़ा के घने जंगल
ऊँघते अनमने जंगल।

इस सुखद दृश्य के बाद कवि जंगल के कठोर और डरावने पक्ष की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं। किसी भी सिक्के के दो पहलू होते हैं। हरियाली की गोद में भी कुछ डरावने पल बैठे हुए हैं। इस मनोहारी जंगल में मकड़ियों की विविध प्रजातियाँ भी हैं। जंगल में इन मकड़ियों के रहस्यमय जाले उनके स्वाभाविक घर हैं। मच्छरों की भिनभिनाहट और दंश इस जंगल का यथार्थ है। इस जंगल के शांत वातावरण में कवि तेज हवा, पानी, आँधी से भी हमारा परिचय कराते हैं। कविता में जंगल का रूप और रंग विविध मौसम में अपने अलग-अलग तेवर में प्रकट हुआ है। इसलिए मिश्रजी का यह जंगल एक रस नहीं है। यह बहुरूपिया है। यह जंगल अजगरों की उपस्थिति से भी समृद्ध है।

मकड़ियों के जाल मुँह पर,
और सर के बाल मुँह पर
मच्छरों के दंश वाले,
दाग काले-लाल मुँह पर,
वात-झन्झा वहन करते,
चलो इतना सहन करते,
कष्ट से ये सने जंगल,
नींद में डूबे हुए से
ऊँघते अनमने जंगल।

पाठगत प्रश्न 6.5

1. जंगल में क्या चुप नहीं है-

   (क) पलाश (ख) कास

   (ग) हवा (घ) घास

2. कविता के इस अंश में जंगल में किसका चित्र नहीं दिखाई देता-

(क) मकड़ियों के जाल का (ख) होली के त्योहार का

(ग) मच्छरों के दंश का (घ) हिरन-दल का

अंश-2

अजगरों से ..... अनमने जंगल

अजगरों से भरे जंगल।
अगम, गति से परे जंगल
सात-सात पहाड़ वाले,
बड़े छोटे झाड़ वाले,
शेर वाले बाघ वाले,
गरज और दहाड़ वाले,
कम्प से कनकने जंगल
नींद में डूबे हुए से
ऊँघते अनमने जंगल।

इन वनों के खूब भीतर,
चार मुर्गे, चार तीतर
पाल कर निश्चिन्त बैठे,
विजन वन के बीच बैठे,
झोंपड़ी पर फूस डाले
गोंड तगड़े और काले।
जबकि होली पास आती,
सरसराती घास गाती,
और महुए से लपकती
मत्त करती बास आती,
गूंज उठते ढोल इनके,
गीत इनके, बोल इनके

सतपुड़ा के घने जंगल
नींद में डूबे हुए से
ऊँघते अनमने जंगल

प्रसंग : कवि ने इस अंश में जंगल की भयंकरता और उसमें मनुष्य की उपस्थिति का चित्रण किया है।

चित्र 6.6: बाघ आदि जानवर एक साथ

व्याख्या : जंगल और पहाड़ एक दूसरे के पूरक होते हैं। इन जंगलों की ओट में पहाड़ों की समानान्तर कई पंक्तियाँ फैली हुई हैं। इसीलिए सतपुड़ा के इस जंगल को ''सात-सात पहाड़ वाले'' कहा गया है। यानी वनस्पति के साथ पहाड़ का यह संगम इसे दुर्लभ बनाता है। पहाड़ों की इन श्रृंखलाओं में सिंह की उपस्थिति हमारे मन में कौतूहल और भय दोनों पैदा करती है। शेर की आवाज वनैले वातावरण को और स्वाभाविक बना देती है। जब कवि ने ऊँघते जंगल में प्रवेश किया तब उसने इस ध्वनि की कल्पना नहीं की थी। लेकिन यह जंगल विविध आवाजों का अजायबघर है। इन हिंसक पशुओं के बीच मजबूत कद-काठी के एक गोंड से मुलाकात होती है। कवि के अनुसार जंगल ही उसके जीवन का आधार है। सतपुड़ा का जंगल मानो उसमें एकाकार हो गया है। मुर्गे और तीतर उसके घर की शोभा बढ़ाते हैं। उसकी झोपड़ी जंगल की ही चीजों से निर्मित है। महुए की सुगंध से उसकी झोपड़ी सुवासित है। होली का उल्लास और मस्ती जंगल के कठोर वातावरण को स्वप्निल बना देते हैं। लेकिन यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि मनुष्य की उपस्थिति से सतपुड़ा का जंगल रोचक और आनंदमय हो गया है।

पाठगत प्रश्न 6.6

1. वन में कौन निश्चिंत है–

   (क) मुर्गे (ख) तीतर (ग) गोंड (घ) झोंपड़ी

2. कविता में निम्न में से कौन-सी विशेषता गोंड जनजातियों की नहीं है–

   (क) उन्होंने मुर्गे और तीतर पाले हुए हैं

   (ख) झोंपड़ी पर फूस डाल रखा है।

   (ग) वे तगड़े और काले हैं।

   (घ) वे अनमने रहते हैं

अंश-3

धँसों इनमें ... बने जंगल।

प्रसंग : कवि इन अंशों में जंगल की उपयोगिता और मानव जीवन में इनके महत्व को उद्घाटित करता है।

व्याख्या : अन्त में, कवि ने इस जंगल को हमारे लिए अत्यन्त मानवीय आनंदमय स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है। जंगल ही हमारे प्राणवायु का आधार है। ये वर्षा वन हमारे जीवन के लिए, हमारे पोषण के लिए बहुत उपयोगी हैं। इसीलिए कवि ने इस जंगल हमारे जीवन का आधार माना है। ये मौत का घर नहीं है।

प्राणदायिनी नदियाँ इन्हीं जंगलों और पहाड़ों से आकार ग्रहण करती हैं। ये नदी, निर्झर और नाले जंगल को खूबसूरत बनाते हैं। सारे पर्यटन केंद्र इन्हीं जल धाराओं के आसपास होते हैं। परिंदों की चहचहाहट और नदियों की उदगम भूमि भी इन्हीं जंगलों में है। अरण्य, अभयारण्य और पक्षी बिहारों के एक-दूसरे के सरोकार होते हैं। कविता के अंत में कवि का मन भी हिरन-दल के साथ कुलाँचे भरने लगता है विविधवर्णी परिंदों के संग विचरण करने लगता है। वनैले पुष्पों के संग झूमने लगता है। रात की स्वच्छ चाँदनी की कल्पना में अठखेलियाँ करने लगता है। नए पत्ते और हरित दूर्वा कविता के अंत में एक सम्मोहनकारी और मनोरम वातावरण की सृष्टि करते हैं। ऐसे लतायुक्त जंगल से हम विदा लेते हुए कृतज्ञता से भर उठते हैं। यह एक आरण्यक कविता है। वनस्पति से पूरी सृष्टि का एक पावन रिश्ता है। जंगल का दर्द मिश्रजी शिद्दत से समझते हैं। इसीलिए इस कविता में वे पर्यावरण के प्रवक्ता के रूप में दिखाई देते हैं। वे कहीं उपदेशक के रूप में प्रकट नहीं हैं। इसीलिए यह एक सार्वकालिक सौंदर्य की कालजयी कविता है।

धँसो इनमें डर नहीं है,
मौत का यह घर नहीं है,
उतर कर बहते अनेकों,
कल-कथा कहते अनेकों,
नदी, निर्झर और नाले,
इन वनों ने गोद पाले।
लाख पंछी सौ हिरन-दल,
चाँद के कितने किरन दल,
झूमते बन-फूल, फलियाँ,
खिल रहीं अज्ञात कलियाँ,
हरित दूर्वा, रक्त किसलय,
पूत, पावन, पूर्ण रसमय
सतपुड़ा के घने जंगल,
लताओं के बने जंगल।

पाठगत प्रश्न 6.7

1. कवि सतपुड़ा के जंगल को मौत का घर नहीं मानते, क्योंकि–

   (क) यह बहुत घना है (ख) यह निर्जन है

   (ग) यह शांत है (घ) यह सभी का पालन करता है

2. जंगल ने किसे अपने गोद में पाला है–

   (क) नदी (ख) झरना

   (ग) नाले (घ) नदी, झरने और नाले को

6.7 भाव-सौंदर्य एवं शिल्प-सौंदर्य

(क) सतपुड़ा के जंगलों में एक गहन निस्तब्धता अर्थात् शांति है। सब कुछ अलसाया-सा, अनमना-सा है। कहीं आसमान को छूते हुए शाल के पेड़ हैं, तो कहीं वे आड़े-तिरछे

बेतरतीब ढंग से फैल कर पंगडंडियों के बिलकुल करीब आ गए हैं। ये जंगल इतने सघन हैं कि इनमें हवा भी प्रवेश नहीं कर पाती है। कवि इन जंगलों में धँसने के लिए कहकर निर्भयता का संदेश देता है।

(ख) इन जंगलों में अनेक नदी, निर्झर और नाले बहते हैं और पंछी, फूल, कलियाँ और हरी घास इनकी शोभा बढ़ाती है। जंगलों की शोभा, सुषमा इनमें प्रवेश करने की आकांक्षा भी जगाती है। ये जंगल अजगरों, बाघों और दुर्गम पहाड़ों से भी भरे पड़े हैं। लेकिन मनुष्य वही है जो इसका साहसपूर्वक सामना करे और इसमें प्रवेश करे अर्थात् एक ओर जंगल में सौंदर्य बिखरा पड़ा है और दूसरी ओर भय और कठिनाई भी है।

(ग) पेड़, नदी, पहाड़ और हवा हमारे साथी हैं। हम इन पर निर्भर हैं। इनके बिना मानव जाति का अस्तित्व ही खतरे में है। इन्हीं से हमारा पर्यावरण बनता है। पर्यावरण प्रकृति का अमूल्य उपहार है। अपनी संतुलित जिंदगी के लिए मनुष्य पेड़-पौधों, जल, वायु, पर्वत, जीव जंतुओं आदि पर निर्भर है, फिर भी ज़्यादा-से-ज़्यादा सुविधाओं के भोग के लालच में वह वनों का अंधाधुंध दोहन करता आ रहा है। इसका दुष्परिणाम प्राकृतिक आपदाएँ जैसे बाढ़, भूकंप, सूखा आदि हैं।

(घ) 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता को पढ़ते हुए आपने अनुभव किया होगा कि इसमें आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। कवि ने सरल और प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग किया है जिसमें लयात्मकता भी है।

(ङ) आपने यह भी ध्यान दिया होगा कि इस कविता में दृश्यात्मकता है अर्थात् इसकी पंक्तियों में अनेक चित्र हैं जो कविता को दृश्यात्मक बनाते हैं। साथ ही इसमें चित्रों का काम करती हैं।

(च) मानवीकरण अलंकार भी है। जैसे-झाड़ ऊँचे और नीचे चुप खड़े हैं आँख मींचे। 'सतपुड़ा के घने जंगल' एक ऐसी कविता है जिसमें पेड़, लता, हवा, पत्तों, नदी, निर्झर को मनुष्य के रूप में चित्रित किया गया है। साहित्य की भाषा में इसे 'मानवीकरण अलंकार' कहते हैं। अर्थात् जो मानव नहीं है, जड़ है—कल्पना शक्ति से उसे मानव जैसा व्यवहार करते दिखाना। मिश्रजी ने सतपुड़ा के जंगल के प्राकृतिक सौंदर्य को दर्शाने के लिए इन जंगलों का मानवीकरण किया है।

सतपुड़ा राष्ट्रीय अभयारण्य

सतपुड़ा राष्ट्रीय अभयारण्य भारत के मध्य प्रदेश राज्य के अंतर्गत होशंगाबाद जिले में स्थित है। यह 524 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में फैला हुआ है। यह 1981 ई. में स्थापित किया गया था। राष्ट्रीय अभ्यारण्य का इलाका दुर्गम है। इसके अंतर्गत बलुआ पत्थर चोटियों, संकीर्ण घाटियों, नालों और घने जंगलों के इलाके हैं। इस उद्यान में 1350 मीटर ऊँचे धूपगढ़ शिखर भी हैं और सपाट मैदान भी हैं। यह जैव विविधता में बहुत समृद्ध है। यहाँ वन्य पशुओं में बाघ, तेंदुआ, सांभर, चीतल, नीलगाय, काला हिरण आदि पाए जाते हैं। यहाँ पक्षियों की अनेक प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं। जिनमें धनेश और मोर प्रमुख हैं।

'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता शिलालेख पर अमर

कवि भवानी प्रसाद मिश्र की कालजयी रचना 'सतपुड़ा के घने जंगल' अब किताबों तक ही सीमित नहीं रह गई है। यह कविता बैतूल जिले में जिस स्थान पर बैठकर लिखी गई थी, वहाँ उसे एक शिलालेख पर अंकित करवाकर हमेशा के लिए अमर कर दिया गया है। मिश्र ने वर्ष 1939 ई. में बैतूल शहर से सटे सोनाहारी पहाड़ पर बैठकर यह कविता लिखी थी। उस समय बदनूर (अब बैतूल) शहर जंगलों के बीचों-बीच बसा हुआ था। आज यह जंगल 20 किलोमीटर दूर सरक चुका है। आज के हालात में मिश्रजी की यह कविता 'सतपुड़ा के घने जंगल' हरियाली और पेड़ बचाने के लिए प्रेरणा देने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकती है। इस शिलालेख से आने वाली पीढ़ियों को इस क्षेत्र के अतीत की जानकारी मिलेगी और वे इससे प्रेरणा लेकर पेड़ बचाने व लगाने का संकल्प ले सकेंगे।

6.8 आपने क्या सीखा

1. 'नदी के द्वीप' कविता में प्रतीकों के माध्यम से एक ओर नदी से द्वीप बनने की सहज प्रक्रिया का चित्रण है दूसरी ओर संस्कृति के माध्यम से व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया का भी प्रस्तुतीकरण है।
2. 'नदी' का प्रयोग 'माँ' और संस्कृति के अर्थ में, 'द्वीप' का शिशु और व्यक्तित्व के अर्थ में और 'भूखंड' का पिता और समान के अर्थ में प्रयोग हुआ है अर्थात् कविता में प्रतीकों का एक स्तर प्राकृतिक और दूसरा मानवीय है। दोनों मिलकर प्रकृति और मनुष्य के संबंध को स्पष्ट करते हैं।
3. 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता में जंगल की विविधता, भयंकरता और उपयोगिता का अंकन है।
4. इसमें आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग हुआ है तथा भाषा सरल और प्रवाहमयी है। दृश्यात्मकता सर्वत्र विद्यमान है।
5. प्राकृतिक सौंदर्य में मानवीकरण अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है।

6.9 सीखने के प्रतिफल

- अपने परिवेशगत अनुभवों पर अपनी स्वतंत्र और स्पष्ट राय व्यक्त करते हैं।
- नई रचनाएँ पढ़कर उन पर साथियों से बातचीत करते हैं।
- रोज़मर्रा के जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति-विशेष में भाषा का काल्पनिक और सृजनात्मक प्रयोग करते हुए लिखते हैं; जैसे-बगैर पेड़ों का शहर, पानी के बिना एक दिन।

- विभिन्न साहित्यिक विधाओं को पढ़ते हुए उनके सौंदर्य पक्ष एवं व्याकरणिक संरचनाओं पर चर्चा करते हैं।
- प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर/लिखकर व्यक्त करते हैं।
- हिंदी भाषा एवं साहित्य की परंपरा की समझ लिखकर, बोलकर एवं विचार-विमर्श के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।

6.10 योग्यता विस्तार

(क) कवि-परिचय : सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

हिन्दी साहित्य में 'अज्ञेय' नाम से प्रसिद्ध हैं। उनका जन्म कुशीनगर, उत्तर प्रदेश में 07 मार्च, 1911 को हुआ था। उनके बचपन के कुछ वर्ष लखनऊ, श्रीनगर और जम्मू में बीते। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा अंग्रेजी और संस्कृत में हुई। वे आरंभ में विज्ञान के विद्यार्थी थे। विद्यार्थी में स्नातक करने के बाद उन्होंने एम.ए. अंग्रेजी में प्रवेश लिया। लेकिन क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें अपना अध्ययन बीच में ही छोड़ना पड़ा।

अज्ञेय ने देश-विदेश की अनेक यात्राएँ की। वे कुशल संपादक थे। उन्होंने 'नवभारत टाइम्स' के अलावा 'सैनिक', 'विशाल भारत', 'प्रतीक', 'नया प्रतीक' आदि अनेक साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। हिंदी के प्रसिद्ध समाचार साप्ताहिक 'दिनमान' के वे संस्थापक संपादक थे। 'सप्तक' परंपरा का सूत्रपात करते हुए उन्होंने तार सप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक का सम्पादन किया। प्रत्येक सप्तक में सात कवियों की कविताएँ संगृहीत हैं जो अपने युग की काव्य-चेतना को प्रकट करती हैं।

अज्ञेय ने कविता के साथ कहानी, उपन्यास, यात्रा-वृत्तांत, निबंध, आलोचना आदि अनेक विधाओं में लेखन कार्य किया। शेखर : एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी (उपन्यास), अरे यायावर रहेगा याद, एक बूँद सहसा उछली (यात्रा-वृत्तांत), त्रिशंकु, आत्मनेपद (निबंध), विपथगा, परंपरा, कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल और ये तेरे प्रतिरूप (कहानी संग्रह) प्रमुख रचनाएं हैं।

अज्ञेय प्रकृति-प्रेम और मानव-मन के अंतरद्वंद्व के कवि हैं। उनकी कविता में व्यक्ति की स्वतंत्रता का आग्रह और बौद्धिकता का विस्तार है। उन्होंने शब्दों को नया अर्थ देकर हिंदी काव्य-भाषा का विकास किया। उन्हें साहित्य अकादमी, भारत भारती सम्मान और भारतीय ज्ञानपीठ आदि साहित्य के अनेक पुरस्कार मिले।

(ख) भवानी प्रसाद मिश्र

भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म 1914 ई. में हुआ था। उन्होंने 'कल्पना' नामक पत्रिका का संपादन किया और आकाशवाणी में सेवारत रहे। वे गाँधी जी के अहिंसावादी विचारों से बहुत

प्रभावित थे। नौकरी से अवकाश पाने के बाद उन्होंने गांधी-साहित्य के संपादक मंडल के सदस्य के रूप में भी काम किया। सन् 1985 ई. में उनका निधन हो गया।

भवानी प्रसाद मिश्र का जीवन सादगीपूर्ण था। उन्होंने कविता में भी सहज, सरल और बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। आम बोलचाल की भाषा में बातचीत के अंदाज में कविता करने के लिए वे नई कविता के कवि के रूप में जाने जाते हैं। लयात्मकता उनकी कविता की प्रमुख विशेषता है। उनकी 'गीत-फरोश' शीर्षक कविता बहुत अधिक सराही गई है। 'अनाम तुम आते हो', 'त्रिकाल संध्या', 'परिवर्तन जिए', 'मान सरोवर दिन', 'कालजयी', 'गीतफरोश' आदि उनकी प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं।

6.11 पाठांत प्रश्न

1. 'नदी के द्वीप' में 'नदी' किसका प्रतीक है? स्पष्ट कीजिए।
2. द्वीप को आकार देने में नदी की क्या भूमिका है? स्पष्ट कीजिए।
3. नदी के प्रलयंकारी रूप का वर्णन क्यों किया गया है? उल्लेख कीजिए।
4. 'नदी के द्वीप' कविता का मूल संदेश क्या है? वर्णन कीजिए।
5. द्वीप के माध्यम से आप व्यक्तित्व-निर्माण के लिए कौन-सी शिक्षा प्राप्त करते हैं? उदाहरण द्वारा प्रस्तुत कीजिए।
6. नदी, द्वीप और भूखंड की तुलना किन चीजों से की है? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
7. निम्नलिखित को लगभग 50 शब्दों में स्पष्ट कीजिए:

   (क) नदी और माँ

   (ख) भूखंड और पिता

   (ग) द्वीप और पुत्र
8. आपके व्यक्तित्व को निखारने में जिन लोगों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया उसके बारे में लिखिए।
9. 'नदी के द्वीप' कविता के शिल्प-सौंदर्य का वर्णन कीजिए।
10. निम्नलिखित पंक्तियों के आशय स्पष्ट कीजिए :

    (क) सब गोलाइयाँ उसकी गढ़ी हैं।

    (ख) क्योंकि बहना रेता होना है।
11. सतपुड़ा के घने जंगल में हवा क्यों नहीं प्रवेश कर पाती?
12. कवि ने इन जंगलों में किन-किन कष्टों को सहन करने की बात कही है?

13. कवि ने सतपुड़ा के जंगलों में ऐसा क्या देखा कि वे उसे मौत का घर नहीं मानते?
14. 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता का मूल कथ्य स्पष्ट कीजिए।
15. 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता के सौंदर्य के तीन बिंदुओं को अपने शब्दों में रेखांकित कीजिए।
16. 'वन हैं तो हम हैं–' इस विषय पर तर्क सहित अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

6.12 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर 6.1

1. (क)
2. (क)
3. (ख)

पाठगत प्रश्न के उत्तर

6.1	1. (ख)	2. (घ)
6.2	1. (ग)	2. (ग)
6.3	1. (ग)	2. (क)
6.4	1. (घ)	2. (क)
6.5	1. (ग)	2. (ख)
6.6	1. (ग)	2. (घ)
6.7	1. (घ)	2. (घ)